E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नामकरण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाकवि अपने काव्यों या नाटकों का नामकरण या तो नायक-नायिका के नाम पर करता है अथवा वर्ण्य विषय या किसी घटना विशेष के आधार पर, जो काव्य अथवा नाटक की केन्द्र बिन्दु होती है। मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालतीमाधवम् आदि प्रथम कोटि के उदाहरण हैं जबकि मृच्छकटिकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, वेणीसंहारम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि द्वितीय कोटि के।

शाकुन्तल में दुर्वासा के शाप से विस्मृत शकुन्तला का स्मरण नायक दुष्यन्त को मुद्रिका रूप अभिज्ञान (पहचान) के द्वारा होता है। अतः इस नाटक का नाम अभिज्ञानशाकुन्तलम् है। विद्वानों ने इसकी व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से की है जिनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जा रहा है-

१. 'अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम्'। अभि उपसर्ग पूर्वक 'ज्ञा' धातु से करण अर्थ में 'करणाधिकरणयोश्च' सूत्र से ल्युट् प्रत्यय; अभि+ज्ञा+ल्युट् अभिज्ञानम्। शाकुन्तलम्- शकुन्तलामधिकृत्य कृतं नाटक शाकुन्तलम्। यहाँ पर 'अधिकृत्यकृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय हुआ है। अभिज्ञानप्रधानं शाकुन्तलम् अभिज्ञानशाकुन्तलम्। 'शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसङ्ख्यानम्'। इस वार्तिक के उत्तर पद का लोप होकर अभिज्ञानशाकुन्तलम् निष्पन्न होता है जिसका तात्पर्य है- शकुन्तला विषयक वह नाटक जिसमें अङ्गुलीयक रूपी अभिज्ञान प्रधान है।

२. अथवा अभिज्ञानसहितं शाकुन्तलमभिज्ञानशाकुन्तलम् उत्तर पद 'सहित' का लोप। तात्पर्य है- अभिज्ञान के वर्णन से समन्वित शकुन्तला विषयक नाटक।

३. अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम्। अभि+ज्ञा+ल्युट् (करण के अर्थ में) जिसके द्वारा पहचाना जाय उसे अभिज्ञान कहते हैं। अभिज्ञानेन स्मृतम् अभिज्ञानस्मृतम्। शकुन्तलायाः इदमिति शाकुन्तलम् (शकुन्तला का परिणय) अभिज्ञानस्मृतञ्च तत् शाकुन्तलञ्च इति अभिज्ञानशाकुन्तलम् अर्थात् अभिज्ञान

के स्मरण से किया हुआ शकुन्तला का पाणिग्रहण। औपचारिक अभिन्नता के कारण नाटक को अभिज्ञानशाकुन्तलम् कहा जाता है।

४. अभि+ज्ञा+भाव अर्थ में ल्युट् प्रत्यय। शकुन्तलायाः इदमिति शाकुन्तलम्। शकुन्तला+अण् प्रत्यय ('तस्येदम्' सूत्र से) अभिज्ञानञ्चतत्शाकुन्तलञ्चेत्यभिज्ञानशाकुन्तलम्। 'मयूरव्यसंकादयः' सूत्र से समास। अर्थ है- अभिज्ञान से याद की गयी शकुन्तला उपचार की अभिन्नता से नाटक की 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' कहा जाता है।

५. अभिज्ञानञ्च शकुन्तला चेत्यभिज्ञानशाकुन्तले ते अधिकृत्य कृतं नाटकम् 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'। अभिज्ञानशाकुन्तल+अण्, अभिप्राय है- अभिज्ञान एवं शकुन्तला विषयक विरचित नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'।

कतिपय विद्वान् जिनमें प्रो० काले प्रो० राय, प्रो० गोस्वामी, प्रो० बोस आदि प्रमुख हैं, 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इस नाटक का मौलिक नाम 'अभिज्ञानशकुन्तलम्' मानते हैं। उस अवस्था में इसकी व्युत्पत्ति अधोलिखित रीति से की जायगी-'अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानम्'। अभि+ज्ञा+ल्युट् (करणे ल्युट्), अभिज्ञानेन स्मृता अभिज्ञानस्मृता। अभिज्ञानस्मृता शकुन्तला यस्मिन् (नाटके) तदभिज्ञानशाकुन्तलम् । 'शाकपार्थिवादि०' इस वार्तिक से उत्तर पद स्मृता का लोप अर्थात् अभिज्ञान से स्मृत शकुन्तला।

उपर्युक्त व्यक्तियों के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के नाम की सार्थकता सिद्ध हो जाती है।